GRIZZLY
COLLEGE OF EDUCATION
Recognised by ERC, NCTE: Affiliated to VBU Hazaribagh

प्रतिकृति

Bulletin ISSUE Jan-Apr - 2018

From the Directors' Desk

हमें प्रसन्नता है कि कॉलेज की प्राचार्या के सशक्त नेतृत्व में वर्ष के प्रारम्भिक चार महीनों में शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ अनेक विशिष्ट कार्यक्रम भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए हैं। आपकी नेतृत्व क्षमता बेजोड़ है। प्रगति के लिए आप में जुनून और उत्साह भी है। सृजन प्रक्रिया को साकार रूप देने में आपका कोई मिशाल नहीं है। इन्हीं शब्दों के साथ हम टीम के निष्ठावान सदस्यों और अनुशासित प्रशिक्षुओं को ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ व्यक्त करते हैं।

मनीष कपसिमे

अविनाश सेठ

Dr. Sanjeeta Kumari
Principal

From Principal's Desk

उत्साह के चरम स्तर के साथ आपकी पसंदीदा पत्रिका "प्रतिकृति" को लेकर हम प्रस्तुत हैं। इस अंक में हमने जनवरी–अप्रैल 2018 में महाविद्यालय में किये गये विभिन्न ज्ञानवर्द्धक और शैक्षणिक कार्यक्रमों में आपकी सक्रियता और कौशल को प्रस्तुत किया है। इसी परिप्रेक्ष्य में 12 जनवरी को आध्यात्मिक ज्ञान के पुरोधा स्वामी विवेकानन्द राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन, 22 जनवरी को ज्ञान की देवी माँ सरस्वती का विधिवत् पूजन कर उनसे ज्ञान, समृद्धि तथा शुद्धाचरण की प्रार्थना का आयोजन, 26 जनवरी को राष्ट्रीय त्योहार 69वें गणतंत्र दिवस समारोह, 4 फरवरी को प्रत्येक वर्ष की भाँति कॉलेज कैम्पस में सफल रोजगार मेला का आयोजन, 7 फरवरी को महाविद्यालय का स्थापना दिवस कार्यक्रम, 9 फरवरी को विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति के कर–कमलों द्वारा महाविद्यालय के आधुनिकतम नये प्रशासनिक भवन का शिलान्यास समारोह, 10 मार्च को कॉलेज के प्रशिक्षुओं के बीच टी–20 फ्रेन्डली क्रिकेट मैच का आयोजन, 17 मार्च को कॉलेज के प्रशिक्षुओं द्वारा ऐतिहासिक स्थल बोधगया का शैक्षणिक भ्रमण, जिसका उद्देश्य था महात्मा बुद्ध एवं बौद्धदर्शन का सैद्धान्तिक ज्ञान को व्यावहारिक ज्ञान में परिवर्तित करना, 28 अप्रैल को झारखण्ड सरकार के गृह एवं आपदा प्रबन्धन विभाग द्वारा अग्नि से सुरक्षा जागरूकता अभियान कार्यक्रम और 30 अप्रैल को "शिक्षा में बौद्धदर्शन की उपादेयता" विषय पर भाषण प्रतियोगिता का विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किये गये।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि महाविद्यालय में अच्छे मूल्यों का संबर्द्धन हो रहा है। उपर्युक्त सभी विशिष्ट आयोजनों की सफलता कॉलेज के टीम के सदस्यों और प्रशिक्षुओं की कर्त्तव्यपरायणता और सकारात्मकता का ही प्रतिफल है। इसके लिए हम अपनी ओर से सभी का हार्दिक धन्यवाद और शुभकामनाएँ व्यक्त करती हूँ।

Sanjeeta Kumari

Dr. Sanjeeta Kumari
Chief Editor

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Activities of the Month January, February, March & April' 2018

National Youth Day Celebration on Swami Vivekanand Jayanti

Saraswati Puja Celebration

69th Republic Day Celebration

Campus Selection Fair 2018

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

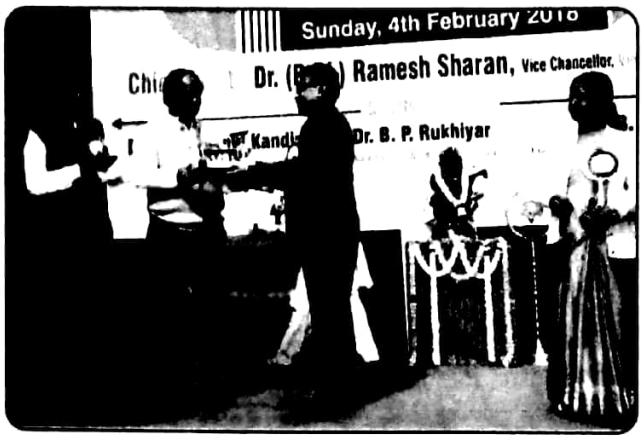

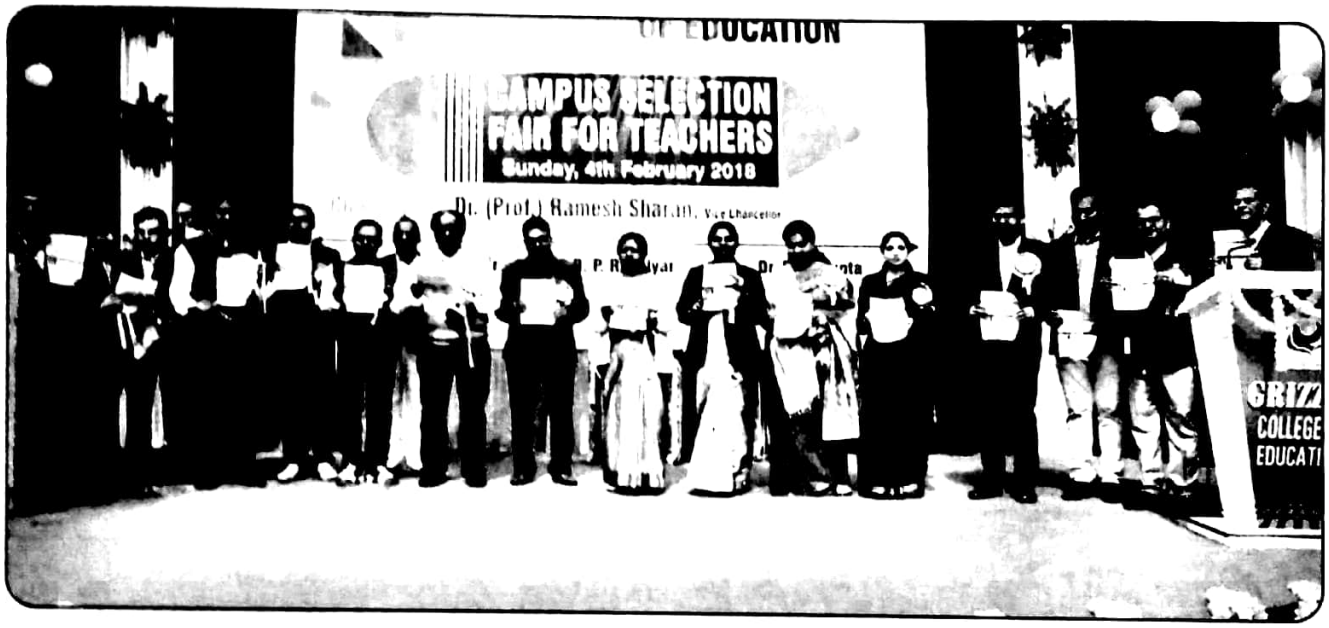

Inauguration of Administrative Building Programme

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

College Establishment Day

T20 Friendly Cricket Match

Workshop on Personality Development Programme

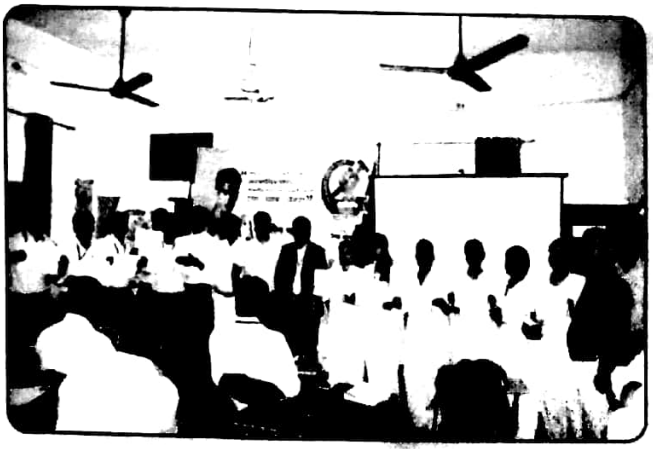

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Educational Excursion

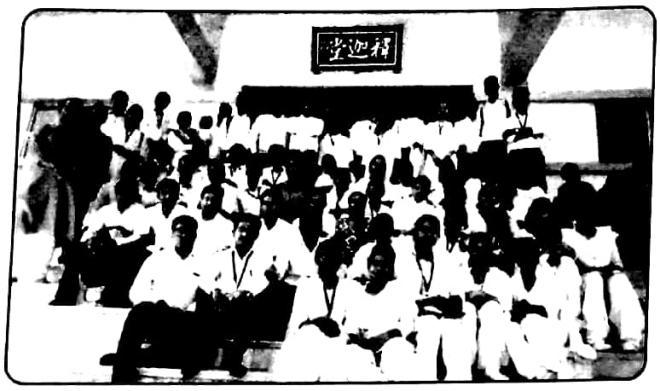

Fire Safety Awareness Programme

Speech Competition on "Relevance of Buddhism Philosophy in Education

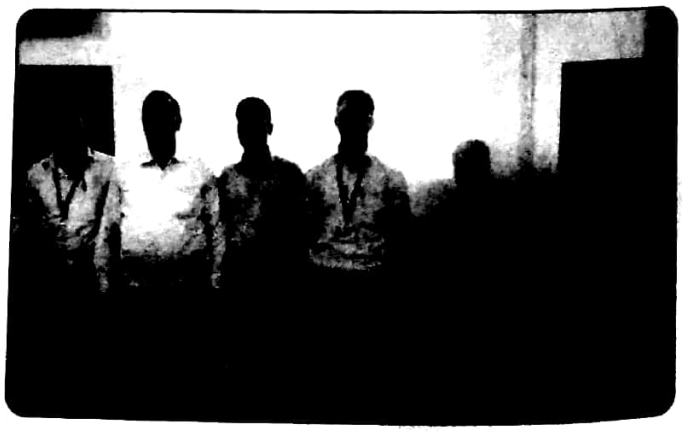

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

'दिनकर की जीवन यर्थाथता'

नित जीवन के संघर्षों से, जब टुट चुका हो अंतर्मन।
तब सुख के मिले समन्दर का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

जब फसल सुखकर जल के बिन, तिनका बन गिर जाये।
फिर होने वाली वर्षा का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

सम्बन्ध कोई भी हो, लेकिन, यदि दुःख में साथ न दे अपना।
फिर सुख में उन सम्बन्धों का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

छोटी–छोटी खुशियों के क्षण निकले जाते हैं रोज जहाँ।
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

मन कटुवाणी से आहत हो, भीतर तक छलनी हो जाये।
फिर बाद कहे प्रिय बचनों का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

सुख साधन चाहे जितने हो, पर काया रोगों का घर हो।
फिर उन अगणित सुविधाओं का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

गर्मी दिन सुखी नदियाँ बिन जल हो जाती जर्जर तन।
वर्षा प्त कलेजे पर लहरें इतराती हो प्रसन्न।
जीवन सार यही जग यें बेअर्थ बने सार्थक निसान।।

प्रो0 वागीश दुबे
व्याख्याता
ग्रिजली कॉलेज ऑफ एजुकेशन

अवसाद से बचें

विगत एक माह के दौरान देश में तीन शख्शियतों ने आत्महत्या किया। एक ए0 डी0 जी0, एक डी0 एस0 पी0 और एक इन्दौर के प्रसिद्ध सन्त ने। अगर देखा जाय तो इन तीनों के पास न तो पैसे की कोई कमी थी न ही पद की और न ही किसी प्रकार के प्रतिष्ठा की। फिर ऐसा क्या था जो तीनों ने अपनी जिन्दगी समाप्त कर ली। एक शिक्षक होने के नाते ये मेरा कर्त्तव्य है कि मैं अपने छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को कैसे उन्नत बनाऊँ या बनाये रखूँ।

क्या ये तीनों शख्शियत अवसाद में थे। कारण पता चला कि अकेलापन एक बड़ी वजह रहा इनकी आत्महत्या का। भारत संयुक्त परिवार से विघटित होकर एकल परिवार और अब तो लिव इन रिलेशन तक पहुँच गया है। बढ़ता एकाकीपन अवसाद की स्थिति में ले जा रहा है और लम्बे समय तक अवसाद व्यक्ति को आत्महत्या पर पहुँचा देता है।

शिक्षक निम्नलिखित उपायों को अपनाकर अपने छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत बना सकते हैं।

(1) स्नेहपूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार

(2) आवश्यकताओ के अनुकूल अध्ययन

(3) वैयक्तिक विभिन्नता के सिद्धान्तों के अनुकूल अध्ययन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(4) खेल एवं मनोरंजन की व्यवस्था
(5) व्यक्तिगत निर्देशन
(6) शैक्षिक निर्देशन
(7) व्यावसायिक निर्देशन
(8) योग एवं प्राणायाम को अपनाकर

प्रो0 मोहित कुमार तिवारी
व्याख्याता
ग्रिजली कॉलेज ऑफ एजुकेशन

मैं

हमारे सम्पूर्ण जीवन काल में अगर मुझे किसी को जानने की सबसे ज्यादा जरूरत है तो वह इंसान है – मैं अगर किसी के साथ ईमानदार होना हो, किसी की देखरेख करनी हो, किसी से प्यार करना हो, किसी पर भरोसा करना हो, किसी की इज्जत करनी हो तो वह सर्वप्रथम व्यक्ति खुद होना चाहिए क्योंकि जो हम अपने लिए नहीं कर सकते हैं, वह दूसरों के लिए करना नामुमकिन है। अपने आप को जानना व पहचानना मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी सफलता है और इस सफलता को प्राप्त करने के लिए खुद को समय देना होगा, खुद की अच्छाइयों तथा बुराईयों को पहचानना होगा। आज मानव इतना व्यस्त हो चुका है कि खुद को इस भीड़ व भागदौड़ की दुनियाँ में भूलता जा रहा है और जब खुद के लिए समय चाहता है तब तक देर हो चुकी होती है। लोग कहते हुए पाए जाते हैं कि मैं खुद को ढूँढ़ रहा हूँ।

अब एक प्रश्न यह उठता है कि स्वयं को क्यों जानना चाहिए तो मैं अपने जीवन का एक उदाहरण देकर बताता हूँ। यह उस समय की बात है जब मैं अपने दोस्तों के साथ 12वीं कक्षा की अंतिम परीक्षा देकर घर वापस लौट रहा था। उनमें से एक दोस्त तम्बाकू का सेवन करता था। उसने मुझे तम्बाकू खाने को कहा परन्तु मैंने मना किया लेकिन साथ ही यह भी सोचा कि कहीं मेरा दोस्त नाराज न हो जाए और फिर मैंने खा लिया। फिर मुझे उल्टी शुरू हो गई और अचानक से मैं बेहोश हो गया। क्या आपकों लगता है कि मुझे मेरे बारे में जानकारी होती तो उस दोस्त को नाराज नहीं करने के लिए खुद को नुकसान पहुँचाया होता ? बिल्कुल नहीं। यह एक एहसास है जो बताती है कि हम कौन हैं और हम किन उसूलों पर चलते हैं। यह ज्ञान हमें किसी और की कठपुतली नहीं बनने देती और हम खुद के हीरों होंगे।

इस दुनियाँ में कोई भी व्यक्ति एक'दूसरे व्यक्ति के समान नहीं है। सभी का व्यक्तित्व अलग है एवं सभी स्वयं में अनोखे हैं। मैं अनोखा हूँ, आप अनोखे हैं, आप सब अनोखे हैं बस जरूरत है तो सिर्फ मानने की, खुद को पहचानने की। जैसे मैं खुद के बारे में बताता हूँ। मैं इस दुनियाँ में बहुत खास हूँ तथा मेरा व्यक्तित्व औरों से बहुत अलग है। मैं एक जिम्मेदार व्यक्ति हूँ तथा जिम्मेदारियाँ होना मेरे खून में है। मैं एक नेतृत्वकर्त्ता हूँ जो काम करने में सबसे आगे और फल प्राप्ति में सबसे पीछे रहता हूँ। मैं स्वकेन्द्रित भी हूँ परन्तु इसके लिए कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता हूँ। मुझे खुश रहना तथा हँसता हुआ चेहरा देखना पसंद है और इसलिए सभी को हँसाता रहता हूँ।

विकास कुमार
811, 2017-19

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

मनुष्य की कीमत

लोहे के दुकान में अपने पिता के साथ काम कर रहे एक बालक ने अचानक ही अपने पिता से पूछा – "पिताजी इस दुनिया में मनुष्य की क्या कीमत होती है ?"

पिताजी एक छोटे से बच्चे से ऐसा गंभीर सवाल सुनकर हैरान रह गये, फिर वे बोले "बेटे एक मनुष्य की कीमत आंकना बहुत मुश्किल है, वो तो अनमोल है।"

बालक – क्या सभी उतना ही कीमती और महत्वपूर्ण हैं ?

पिताजी – हाँ बेटे।

बालक कुछ समझ नहीं पाया उसने फिर सवाल किया – तो फिर इस दुनिया में कोई गरीब तो कोई अमीर क्यों है ? किसी की कम रिस्पेक्ट तो किसी की ज्यादा क्यों होती है ?

सवाल सुनकर पिताजी कुछ देर तक शांत रहे और फिर बालक से स्टोर रूम में पड़ा एक लोहे का रॉड लाने को कहा। रॉड लाते ही पिताजी ने पूछा इसकी क्या कीमत होगी ?

बालक – 200 रू0

पिताजी – अगर मैं इसके बहुत से छोटे–छोटे कील बना दूँ तो इसकी क्या कीमत हो जायेगी ?

बालक कुछ देर सोच कर बोला – तब तो ये और महंगा बिकेगा लगभग 1000 रू0 का।

पिताजी – अगर मैं इस लोहे से घड़ी के बहुत सारे स्प्रिंग बना दूँ तो ?

बालक कुछ देर तक गणना करता रहा और फिर एकदम से उत्साहित होकर बोला "तब तो इसकी कीमत बहुत ज्यादा हो जायेगी।"

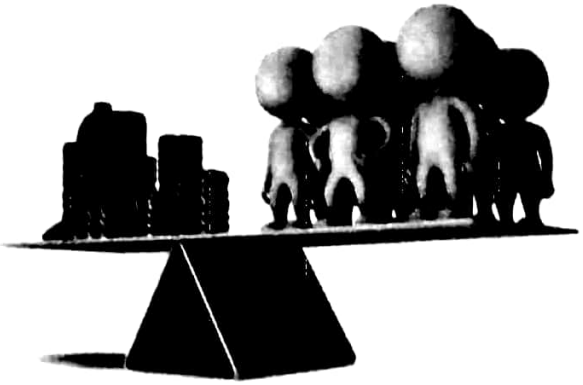

फिर पिताजी ने उसे समझाते हुए कहा – "ठीक इसी तरह मनुष्य की कीमत इसमें नहीं है की अभी वो क्या है, बल्कि इसमें है कि वो अपने–आप को क्या बना सकता है।"

बालक अपने पिता की बात समझ चुका था। अक्सर हम अपनी सही कीमत आंकने में गलती कर देते हैं। हम अपनी वर्तमान स्थिति को देखकर आने आप को कम आंकने लगते हैं। लेकिन हममें हमेशा अथाह शक्ति होती है। हमारा जीवन हमेशा संभावनाओं से भरा होता है। हमारे जीवन में कई बार स्थितियाँ अच्छी नहीं होती हैं पर इससे हमारा मूल्य कम नहीं होता है। मनुष्य के रूप में हमारा जन्म जब इस दुनिया में हुआ है तो इसका मतलब है कि हम बहुत विशेष और महत्वपूर्ण है। हमें हमेशा अपने–आप को संवर्धित करते रहना चाहिए और अपनी सही कीमत प्राप्त करने की दिशा में बढ़ते रहना चाहिए।

पुष्पम रंजन
727, 2016-18

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

I am a Leader

Yes I am a Leader,
While working I be the first,
Getting fruits I be the Last,
Yes I am a Leader.
Working for the Nation,
No need of one's attention,
Yes I am a Leader.
Very generous is my Posture,
Nobody can change my gesture,
Yes I am a Leader.
Learning, Educating, Clearing I do daily
What people need to do exactly.

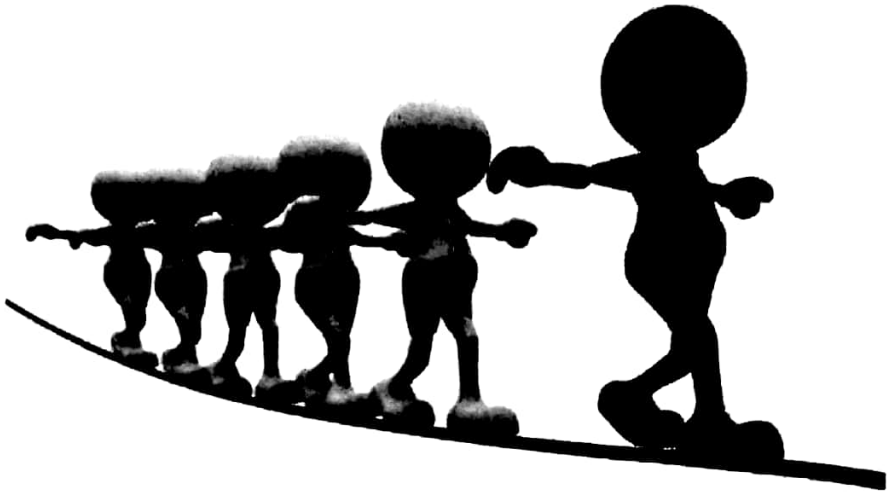

Vikash Kumar
811, 2017-19

When the situation demands, Exit Gracefully

One of the most important lessons I have learnt from Robert Schuller's book : 'Success is Never Ending ; Failure is Never Final'. Setbacks come and in every person's life there are times of being 'out'.

Schuller talks about existing from many such situations gracefully, and then at some later stage making a comeback in another area of life, field, sphere or position. To exit gracefully means that we do not cling to our positions when the time is over or the circumstances changes. We do not end with bitterness or adopt a defeatist attitude when things go wrong for us as they obviously will, from time to time. There is a time and season for everthing. In the political process, some exit gracefully while others cling to their positions of power. Retirement can be one such occasion when someone find suddenly that he is out.

When there is serious competition for a job, a few may land a job and others who may be as talented find that they have to look for other, less attractive options.

We will all have to go through some experience of being 'out' because life is all about change and uncertaintity. A final momet will come to the grand exist and death beckons, we must leave this world gracefully because what matters is not that we die but how we die. Having a peaceful death is one important manifestation of existing gracefully.

Pushpita Pandey
869, 2017-19

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Best House of The Month **Jan'18 :- Aristotle House**
Best House of The Month **Feb'18 :- Rousseau House**
Best House of The Month **Mar'18 :- Radhakrishnan House**
Best House of The Month **April'18 :- Radhakrishnan House**

ACHIEVEMENTS

100% Attendance for Session 2017-19 in Jan' 2018

Name	Roll No.	Name	Roll No
Vikas Kumar	811	Vipul Kumar	828
Sourabh Kumar	829	Ajit Prasad	847
Shambhu Yadav	849	Ranju Kumari	851
Praveen Prasad Yadav	855	Priti Kumari	859
Zeba Khatoon	860	Priya Kumari	861
Suman Kumari	864	Krishna Kumar Yadav	871
Chhoti Kumari	872	Sarita Raj	886
Nisha Kumari	888		

100% Attendance for Session 2016-18 in Feb' 2018

Name	Roll No.	Name	Roll No
Suraj Kumar	705	Dolly Rani	707
Sandhya Kumari	713	Umapati Mishra	757
Soni Gupta	759	Pooja Kumari	769

100% Attendance for Session 2017-19 in Mar' 2018

Name	Roll No.	Name	Roll No
Vikas Kumar	811	Harshita Tarwe	837
Ajit Prasad	847	Shambhu Yadav	849
Ranju Kumari	851	Priti Kumari	859
Priya Kumari	861	Reeta Kumari	866
Chhoti Kumari	872	Sarita Raj	886
Nisha Kumari	888		

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

100% Attendance for Session 2016-18 in Mar' 2018

Name	Roll No.
Suraj Kumar	705
Dolly Rani	707
Sandhya Kumari	713
Umapati Mishra	757
Soni Gupta	759
Pooja Kumari	769

100% Attendance for Session 2017-19 in April' 2018

Name	Roll No.
Vikas Kumar	811
Krishna Kumar Yadav	871
Chhoti Kumari	872
Sarita Raj	886
Nisha Kumari	888

Editorial Board

Book - Post

Chief Editor :
Dr. Sanjeeta Kumari

Editors
Prof. Mohit Kumar Tiwari
Prof. Vageesh Dubey

Student Editors
Pushpita Pandey
Vikash Kumar

To

PRINTED AT: BHAGWATI PRESS, JHUMRITEI AIYA, PH.# 06534-222453

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner